सोऽहमिज्याविशुद्धात्मा प्रजालोपनिमीलितः ।

प्रकाशश्चाप्रकाशश्च लोकालोक इवाचलः ।।68।।

अन्वय इज्याविशुद्धात्मा प्रजालोपनिमीलितः सः अहम् लोकालोकः अचलः इव प्रकाशश्च अप्रकाशश्च।

अनुवाद यज्ञ आदि करने से मैं देवऋण से मुक्त होने के कारण प्रसन्नचित्त अथवा पुत्र के अभाव में पितृऋण से मुक्त होने के कारण मलिनचित्त (उद्विग्न) हूँ। अतः मेरी दशा लोकालोक पर्वत के समान है जिसके एक ओर प्रकाश तथा दूसरी ओर अन्धकार रहता है।

टिप्पणियाँ

इज्याविशुद्धात्मा विशुद्धः आत्मा यस्य स विशुद्धात्मा (बहुव्रीहि) इज्यया विशुद्धात्मा इति (तृतीया तत्पुरुष); यज्ञों के करने से शुद्ध है आत्मा जिसकी, ऐसा मैं दिलीप। इज्यात्र्यज्ञ (धातु यजूक्यपूटाप्) "यज्ञदानतः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्। यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।" (गीता 18ण्5)

प्रजालोपनिमीलितः प्रजायाः लोपः इति प्रजालोपः (षष्ठी तत्पुरुष)। प्रजालोपेन निमीलितः प्रजालोपनिमीलितः (तृतीया तत्पुरुष) सन्तान के न होने से मलिन (उदास)।

लोकालोकः अचलः चव्वाल नामक पर्वत। लोक्यते इति लोकः, न लोक्यते इति अलोकः लोकश्चासौ अलोकश्च इति लोकालोकः वह पर्वत जिसके एक ओर प्रकाश तथा दूसरी ओर अन्धकार रहता है।

विशेष पुराणों के अनुसार लोकालोक उस पर्वतमाला का नाम है जो दीवार की तरह पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए है। इसके गोलाकार घेरे में सूर्य तथा अन्य नक्षत्र घूमते है। जिससे पर्वतमाला का आभ्यन्तर भाग प्रकाश के परिपूर्ण तथा बाह्य भाग अन्धकार से आच्छन्न रहता है। राजा दिलीप भी लोकालोक पर्वत के समान है क्योंकि यज्ञ आदि के करने से वह पवित्र तथा प्रकाशमान हैं परन्तु पुत्र के अभाव से वह दु:ख रूपी अन्धकार से मलिन हैं। अत: राजा की लोकालोक पर्वत से तुलना उपयुक्त है।